इन्टरव्यू-४

प्र: आपका नाम क्या है ?
ज: मेरा नाम समीन भाईजा है।

प्र: आपकी उम्र कितनी है ?
ज: मेरी उम्र 35 साल है।

प्र: आपके पास कितने करघे है ?
ज: हमारे पास दो करघे है।

प्र: दोनों पर आप ही बुनते हैं ?
ज: नहीं एक पर कारीगर है एक पर मैं।

प्र: दोनों करघे मिलाकर कितनी आमदनी हो जाती है ?
ज: वही एक महीने में तीन हजार।

प्र: आपके परिवार में कितने लोग हैं ?

ज: मेरे परिवार में चार लोग हैं।

प्र: उससे खर्च निकल आता हैं ?
ज: हां, निकल आता है।

प्र: अच्छा, बुनकारी के अलावा भी कोई काम है कि सिर्फ बुनकारी का ?
ज: सिर्फ बुनकारी का।

प्र: रेशम लेते है वो गृहस्था से लेते है या दुकान से ?
ज: दोनो से ही लेते हैं, जैसे जरूरत हों।

प्र: साड़ी कैसे बेचते हैं सीधे मॉर्केट में जाते हैं कि गृहस्था द्वारा बेचते हैं ?
ज: गृहस्था द्वारा बेचते हैं, लगार लगा है अपना जैसे माल एक दुकान पर नहीं बिका तो दूसरी जगह बिका।

प्र: लेकिन बेचते गृहस्था को ही हैं ?
ज: हां।

प्र: एक साड़ी में आपको कितना मिलता है आमदनी कितनी होती है ?
ज: करीब चौदह सौ रुपये।

प्र: मतलब लागत कितनी आती है ?
ज: दो हजार रुपये।

प्र: मिलता कितना है आपको ?
ज: मिलता है तेरह-चौदह सौ।

प्र: तेरह सौ आमदनी होती है कि पूरी साड़ी का मिलता है ?
ज: आमदनी मतलब, लागत तानी-बाना के छोड़ के तेरह-चौदह सौ मिलता है।

प्र: तब तो बहुत कम मिला, मतलब दो हजार में आप बुने और मिला तेरह-चौदह सौ तो कम मिला ना ?
ज: नहीं तो, मतलब कि तेरह सौ मजूरी व मैटेरियल का काटके ना मिला, साड़ी डायरेक्ट तो बीकती नहीं कि जो खरीदा वही पहना मतलब एक खरीदा फिर उसने बेचा दूसरा खरीदा ऐसे गद्दी।

प्र: अच्छा मतलब एक गद्दी से दूसरी ?
ज: हां मतलब आपको पता नहीं लगेगा कि साड़ी गई कहां।

प्र: अच्छा, साड़ी का पैसा तुरंत मिलता है कि कुछ दिन बाद ?
ज: तुरन्त भी मिलता है और कुछ दिन बाद भी मिलता है।

प्र: कभी ऐसा भी होता है जब पूरी साड़ी की लागत भी नहीं मिल पाती ?

ज: हां, होता है।

प्र: कब ?
ज: जब दाग लग जाये, बरसात आ गई दाग उतर गया, बच्चा समान कुछ गिरा दिया और दाग नहीं छूटा।

प्र: तब उस साड़ी का क्या करते हैं ?
ज: तब वो पांच सौ रुपये में बिकती है दो हजार का माल। यहाँ तक की तानी बाना का दाम भी नहीं निकलता।

प्र: रहने वाले यहीं के हैं ?
ज: नहीं, पहले हम मदनपुरा, सदानन्द बजार मुहल्ले में थे।

प्र: आपके पुरखें भी यहीं काम करते थे ?
ज: हाँ।

प्र: आप अपने पुरखों की भी स्थिति देखे अपनी भी देख रहे हैं तो कोई फर्क आया हैं, दोनों की स्थिति में ?
ज: हां, हम जो देख रहे हैं उसमें हम लोगों का कुछ अच्छा ही दिखाई देता है उस वक्त मतलब और पहले और अच्छा था, कभी अच्छा वक्त कभी बुरा तो लगा ही रहता है मतलब सुनते है हम लोगों के यहाँ पहले चक्की चलती थी, मशीन चलती थी। उसपर असली तार वाल बुनाई होता था।

प्र: तो ये क्या नकली है ?
ज: हाँ, ये सब नकली है।

प्र: अब तो हर जगह ऐसी ही बुनाई होती है ?
ज: हाँ ऐसी ही बिनी जाती है।

प्र: यानी बनारस भर में हर जगह नकली तार की बिनाई होती है असली वाली नहीं ?
ज: नहीं, होती है, लेकिन हमारे यहाँ नहीं होती आर्डर पर कहीं-कहीं होती है।

प्र: बुनकरों कि स्थिति कब से ज्यादा खराब हुई है ?
ज: हमको तो पांच-छह साल से लग रहा है।

प्र: कारण क्या है ?
ज: हमें तो वही लगता है कि जंग कहते है आतंकवादी इसी सब की वजह से ऐसा होता है।

प्र: इन सब से साड़ी पर क्या फर्क पड़ेगा ?
ज: यहीं कि बिक्री नहीं होगी, बिक्री नहीं होगी तो माल का क्या होगा कोई उधार पे उधार तो देता नहीं जायेगा कोई दुकानदार। उसका भी कोई निर्भर होगा कि 15 दिन महिना अधिक से अधिक हो।

(साईड बी)
प्र: सरकारी सहायता कभी ली ?

ज: नहीं हमने कभी सरकारी सहायता लेने की कोशिश नहीं की जैसे लोन वगैरह नहीं ली।

प्र: अच्छा मिलता है कि नहीं ?
ज: मिलता है उसके लिए दौड़ धूप करो तब अब कोई घर बैठे तो देगा नहीं कि लोन लो।

प्र: अच्छा आपको कभी जरुरत नहीं हुई कि लेने की या कभी लिए नहीं ?
ज: नहीं जरुरत पड़ी तो अपने किसी तालुक्काती से ले लिए।

प्र: तालुक्काती मतलब गृहस्था लोग से ?
ज: नहीं तालुक्काती माने रिश्तेदार पड़ौसी आदि से।

प्र: बैंक से नहीं लेते ?
ज: नहीं

प्र: बुनकर सोसाइटी के बारे में जानते है यहां बनी हैं ?
ज: नहीं हम लोग सोसाइटी के बारे में नहीं जानते, बनी है लेकिन हम लोगं का उससे कोई मतलब नहीं हैं।

प्र: आप शामिल नहीं हैं ?
ज: नहीं हम शामिल नहीं हैं।

प्र: लेकिन कभी सोचे भी नहीं की समिति हो ?
ज: नहीं, हम लोग कास धन्धे में फंसे है मतलब उसमे जाए और टैक्स लगे।

प्र: लेकिन उसमे जाने से आसानी हो जायेगी साड़ी बीकने में, लोन मिलने में। कभी जाने की नहीं सोची ?
ज: लोन मिलता है। पर हम सोचे कि कहीं तरक्की के बजाय पीछे हो जाए, लोन भरना भी पड़ेगा। ब्याज भरना पड़ेगा।

प्र: समिति में भी क्या लोन या ब्याज भरना पड़ता है ?
ज: भरना तो पड़ेगा अब जो रुपया देगा उसे ब्याज तो देना ही होगा।

प्र: बुनकरों कि स्थिति के सुधार के लिए क्या करना चाहिए, आपको क्या लगता है सरकार को क्या करना चाहिए ?
ज: हमें नहीं पता कि क्या करना चाहिए।

प्र: अच्छा इस वक्त रेशम सस्ता है कि मंहगा ?
ज: इस समय तो सस्ता है।

प्र: लेकिन जब रेशम जब सस्ता होता है तो आपको फायदा होता है ?
ज: नहीं रेशम जब सस्ता होगा तो साड़ी का दाम कम हो जाता है। बराबर हो जाता है, फायदा अढ़हतिया का होता है।

प्र: कैसे अढ़तिया को कैसे फायदा होता है ?
ज: जब रेशम सस्ता हुआ तो ढेर सारा लेकर स्टाक खरीद लिए और महंगा होने पर उसे मंहगे दाम पर बेच देते हैं तो उसका फायदा हुआ ना। उन्हें पता भी लग जाता है दाम बढ़ने वाला है या घटने वाला है बड़े लोगो को सब पता होता है उसी से वे बेचना होता है तो बेच देते है खरीदना हो तो खरीद लेते हैं।

प्र: आप लोगों को रेशम के घटने बढ़ने का कोई फायदा नहीं होता ?
ज: नहीं, इस वक्त तो 6 महीने से रेशम का भाव कम है।

प्र: इस समय साड़ियों का बाजार ठीक चल रहा है, बिक्री ठीक हो रही है ?
ज: हाँ, ठीक चल रही है।

प्र: गुजरात दंगों का असर पड़ा था ?
ज: हां कुछ असर है ज्यादे नहीं। दीवाली है।

प्र: इसके बाद शादी का मौसम होगा ?
ज: हां ठिक ठाक चलेगा पर